इस्लाम धर्म की महानता

लेखक

वैज्ञानिक विभाग दारूल वतन

अनुवाद

जावेद अहमद

संशोधन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

www.islamhouse.com

1428-2007

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

सभी प्रकार की प्रशंसायें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं और दरूद व सलाम अवतरित हो हमारे नबी मुहम्मद पर जो कि अंतिम संदेष्टा और आखिरी रसूल हैं।

निःसन्देह इस्लाम धर्म सभी धर्मों में सब से परिपूर्ण, सब से उत्तम, सर्व श्रेष्ठ एंव अंतिम धर्म है। और शुद्ध बुद्धि इस धर्म को बहुत जल्द स्वीकार करती है, इस लिए कि इस धर्म के अन्दर अनेक प्रकार की उत्तमता, विशेषताएं, नीतियाँ तथा ऐसी खूबियाँ हैं जो इस (इस्लाम) से पहले के धर्मों में नहीं पाई जातीं। पस इस्लाम धर्म वह अंतिम धर्म है जिस को अल्लाह ने अपने मोमिन

बन्दों के लिए पसन्द कर लिया है, जैसा कि उस का कथन है:

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗا﴾

''आज मैं ने तुम्हारे लिये दीन (धर्म) को पूरा कर दिया और तुम पर अपना इनूआम पूरा कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया।'' (सूरतुल माईदाः३)

पस अल्लाह ने इस धर्म को परिपूर्ण कर दिया है। इसी कारण यह धर्म हर प्रकार से पूर्ण है।

और अल्लाह तआला ने हमारे लिये इस (इस्लाम) धर्म को पसन्द कर लिया है, और वह तो अपने बन्दों के लिए सब से पूर्ण उत्तम तथा सर्व श्रेष्ठ वस्तु को ही पसन्द करता है।

तो इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो आत्मा तथा शरीर की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, इस धर्म ने मानवता को कम्यूनिष्ट की तरह किसी हथियार का ढाल नहीं बनाया और न ही रहबानियत की तरह मानवता को उस की अनिवार्य चाहतों से वंचित रखा और न ही भौतिक पश्चिमी सभ्यता (माद्दी मग़्रिबी तहज़ीब) की तरह बग़ैर किसी नियम प्रबंध के कामवासना की बाग डोर उस के लिये खुली छोड़ दी।

इस्लाम धर्म ही केवल ऐसा धर्म है जिस के अन्दर किसी प्रकार की प्रतिकूलता तथा जटिलता नहीं है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا ٱلۡقُرۡءَانَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِن مُّدَّكِرٖ﴾

''तथा निःसन्देह हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है पर क्या कोई नसीहत प्राप्त करने वाला है?''
(सूरतुल-क़मरः१७)

इस्लाम ही केवल वह धर्म है जिस के अन्दर मानवता की कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान पाया जाता है। आस्था के संबंध में पूज्य, संसार तथा मानवता के बारे में सहीह फिक्र प्रदान करता है तथा अहकाम के संबंध में जीवन के उन सभी गोशों को संगठित करता है जो उपासना, अर्थशास्त्र, राजनीति, समस्याएं, व्यक्तिगत मसाइल तथा विश्व स्तर के संबंध इत्यादि को सम्मिलित हैं तथा चरित्र के संबंध में मनुष्य एंव समाज को सभ्य बनाता है।

इस्लाम ही ऐसा धर्म है जिस के अन्दर उन सभी प्रश्नों का संतोष जनक और इतमिनान बख्श उत्तर विस्तार के साथ मौजूद है जिस ने मानवता को आश्चर्य चकित कर रखा है कि मानवता का जन्म क्यों हुआ? शुद्ध पथ (सीधा मार्ग) कौन सा है? तथा इस (मानवता) का अंतिम ठिकाना कहाँ है?

आस्था, चरित्र, उपासना, मुआमलात, तथा व्यक्तिगत विषय और साधारण अहकाम के बारे में इस्लाम सभी धर्मों में सब से पूर्ण, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ और उचित है, वास्तव में यह ऐसा ही है इस लिये कि यह किसी मनुष्य का बनाया हुआ इंसानी धर्म नहीं है परन्तु यह ईश्वरीय धर्म है जिस के अहकाम को अल्लाह तआला ने बनाया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ﴾

"विश्वास रखने वाले लोगों के लिये अल्लाह से बेहतर निर्णय करने वाला कौन हो सकता है?" (सूरतुल माइदाः५०)

और यह धर्म हर प्रकार के अहकाम तथा इस्लामी निज़ाम को सम्मिलित है और सभी अहकाम तथा व्यवस्था में सब से पूर्ण तथा उत्तम और लोगों के लिए सब से उचित है। तथा इस के अन्दर किसी

प्रकार की खराबी, प्रतिकूलता और दुष्टता तथा बिगाड़ नहीं है। और सभी धर्मों की तुलना में इस्लाम को शुद्ध बुद्धि बहुत जल्द स्वीकार करती है।

वास्तव में इस्लाम पूरे जीवन के लिए एक पूर्ण विधान है तथा जिस समय इस धर्म को वास्तविक रूप में लागू करने का अवसर प्रदान किया गया तो इस ने एक ऐसा आदर्श समाज तथा सुसज्जित इंसानी सभ्यता प्रदान किया जिस के अन्दर हर प्रकार की उन्नति तथा सभ्यता पाई और जिस समाज के अन्दर चरित्र तथा ऊँचे नमूनों ने उन्नति की और सामाजिक न्याय निखरा और इंसानी सभ्यता अपने सुसज्जित रूप में सामने आई।

इस्लाम ने तमाम इंसानों को बराबर के अधिकार प्रदान किए, पस किसी अरबी व्यक्ति को किसी अजमी पर और किसी सफेद रंग के व्यक्ति को

किसी काले रंग के व्यक्ति पर कोई प्रधानता नहीं परन्तु यह (प्रधानता) आत्मनिग्रह तथा सत्कर्म के आधार पर होगी। अतः इस्लाम के अन्दर गोत्र-वंश या रंग या देश आदि का पक्षपात नहीं है, बल्कि सत्य तथा न्याय के सामने सभी एक समान हैं।

इस्लाम ने हाकिमों को उनके सारे अहकाम में हर व्यक्ति के विषय में पूर्ण न्याय देने का आदेश दिया। पर इस्लाम के अन्दर कोई भी व्यक्ति नियम से बाहर नहीं है।

और इस्लाम ने लोगों को सहयोग तथा भरणापोषण के आदेश दिये और धनवानों को निर्धनों की सहायता करने और उन के बोझ को हल्का करने तथा उन निर्धनों को एक उत्तम श्रेणी तक पहुँचाने का आदेश दिया और सारे लोगों को परामर्श का आदेश दिया कि जिस परामर्श के नतीजे में यदि लाभदायक चीज़े प्रकट हों तो उन

को अपना लिया जाए, यदि हानिकारक चीज़ें प्रकट हों तो उन को छोड़ दिया जाए।

इस्लाम धर्म की विशेषताएं

वास्तव में इस्लाम धर्म की विशेषताएं बहुत हैं जिन में से कुछ का वर्णन किया जाता हैः

1. ईश्वरीय धर्म शास्त्रः

यह किसी इन्सान का बनाया हुआ धर्म नहीं है जैसा कि हम (इस का) वर्णन कर चुके हैं; क्योंकि यदि ऐसा होता तो इस के अन्दर कमी तथा नक़्स की संभावना होती, परन्तु यह तो ईश्वरीय धर्म है जो ईश्वरीय आदेश द्वारा संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर उतरा फिर संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस ईश्वरीय संदेश को उसी प्रकार लोगों तक

पहुँचाया जिस प्रकार यह अल्लाह तआला की ओर से उतरा था तथा इसी लिए अल्लाह ने कुरआन के अन्दर सूचना दी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कलाम उस अल्लाह की ओर से अवतरित वह्य है जिस के अन्दर चाहत (मन) का दखल नहीं है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَمَا يَنطِقُ عَنِ ٱلْهَوَىٰٓ ۝٣ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْىٌ يُوحَىٰ﴾

"और यह अपने मन से कोई बात नहीं करते हैं यह तो केवल ईश्वरीय आदेश है जो उतारा जाता है।" (सूरतुन् नज्मः३,४)

2. पूर्ण धर्म शास्त्रः

जैसा कि हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि इस्लाम एक पूर्ण धर्म है, एक विस्तृत निज़ाम तथा पूरे

जीवन का एक ऐसा दस्तूर है जो तमाम पहलुओं को घेरे हुए है।

3. कोमल धर्म-शास्त्रः

बेशक इस्लाम ने समय, स्थान और अवस्था के परिवर्तन को यूँ ही नहीं छोड़ दिया बल्कि विद्वानों को नये मसाइल के संबंध में उचित तजूवीज़ पास करने और इजूतिहाद का विशाल अवसर प्रदान किया, परन्तु यह इस्लाम धर्म की साधारण सीमा के भीतर होना चाहिए जिस से कोई अवैध आदेश वैध तथा कोई वैध आदेश अवैध न ठहर रहा हो।

4. न्याय-प्रिय धर्म-शास्त्रः

निःसन्देह इस्लाम धर्म ने न्याय की नीव रखी तथा उस के स्तंभ को मज़बूत बनाया और इसे (न्याय) एक धार्मिक उत्तरदायित्व बतलाया, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُ بِٱلۡعَدۡلِ﴾

''अल्लाह न्याय का आदेश देता है।''
(सूरतुन-नह्लः९०)

तथा कुरआन ने निश्चित किया कि मुसलामनों के लिये उचित नहीं कि वह अपनी व्यक्तिगत प्रवृत्ति के आधार पर तथा अपने खानदान और क़रीबी लोगों के हितों की लालच में न्याय से काम न लें, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَإِذَا قُلۡتُمۡ فَٱعۡدِلُواْ وَلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبَىٰۖ﴾

''तथा जब तुम बात करो तो न्याय करो अगरचे वह व्यक्ति तुम्हारा संबंधित ही हो।''
(सूरतुल अन्आमः१५२)

बल्कि इस्लाम ने तो शत्रुओं तक के साथ न्याय करने का आदेश दिये, जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَلَا يَجۡرِمَنَّكُمۡ شَنَـَٔانُ قَوۡمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعۡدِلُواْۚ ٱعۡدِلُواْ هُوَ أَقۡرَبُ لِلتَّقۡوَىٰۖ﴾

''किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें न्याय से काम न लेने पर न उभारे, न्याय किया करो जो परहेज़गारी के बहुत निकट है।''

(सूरतुल माइदा:८)

पस यह सब इस्लाम के न्याय की विशेषताएं हैं, ऐसा न्याय जिस पर लोगों के बीच पाये जाने वाले संबंध से असर नहीं पड़ता और न ही लोगों के बीच पाई जाने वाली शत्रुता से इस पर असर पड़ता है, तो उचित यह है कि मुसलमान अपने शत्रु के साथ न्याय करे जिस प्रकार वह अपने मित्र के साथ न्याय करता है तथा यह न्याय की ऐसी चोटी है जहाँ आज तक कोई भी इंसानी क़ानून नहीं पहुँच सका है।

५. संतुलित धर्म-शास्त्रः

पस इस धर्म के अन्दर यह शक्ति है कि यह जीवन के ढाँचे को संतुलित रूप में एक दरमियानी स्तंभ के ऊपर खड़ा करे जिस के अन्दर प्रलय के साथ संसार के पहलू का भी ध्यान रखा जाए जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَٱبْتَغِ فِيمَآ ءَاتَىٰكَ ٱللَّهُ ٱلدَّارَ ٱلْأَخِرَةَ ۖ وَلَا تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ ٱلدُّنْيَا ۖ﴾

''और जो कुछ अल्लाह ने तुझे प्रदान किया है उस में से प्रलय (आख़िरत) के घर की तलाश भी रख तथा अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूल।'' (अल-क़ससः७७)

इस्लाम ने धर्ती को आबाद करने और इस में टहलने फिरने तथा इस के कोषागार (खज़ाने) की खोज करने का आदेश दिया, परन्तु इस ने इसी

को उद्देश्य और मक़्सद नहीं ठहराया बल्कि मुसलमान का उद्देश्य और मक़्सद यह बतलाया कि उस से अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये, इसी कारण इस्लाम की सभ्यता एक सुसज्जित इंसानी सभ्यता क़रार पाई क्योंकि इस ने विधान तथा सभ्यता की तरक़्क़ी एंव उन्नति को उस अख़लाक़ी उद्देश्य से जोड़ा जो वास्तव में अल्लाह तआला की प्रसन्नता और उस के स्वर्ग की प्राप्ति है और पश्चिमी माद्दी शिष्टाचार के अन्दर यही संबंध नहीं है जिस के कारण यह सभ्यता खिन्नता का सबब बनी और कोई भी लाभदायक सदाचार पहलू प्राप्त न कर सकी।

6. वास्तविक धर्म-शास्त्रः

वास्तव में इस्लामी अहकाम केवल खयालात की दुनिया में बयान नहीं किये जाते बल्कि यह एक वास्तविक धर्म है जो मानवता की आवश्यकताओं

की पूर्ति करता है तथा उनके सभी मामलात में कठिनाइयों को दूर करता है।

और इस्लाम के वास्तविक रूप में से यह है कि यह मानव प्रकृति के अनुसार है इस के विपरीत नहीं।

बल्कि इस ने इस (मानव-प्रकृति) को उत्तमता तथा ऊँचे आदर्श की दिशा दी और इस्लाम ने इसी कारण विवाह को वैध ठहराया तथा उस पर उभारा और इस ने व्यभिचार और विवाह की सीमा से बाहर रह कर यौन संबंध क़ायम करने को अवैध बतलाया और इस के द्वारा खानदान के टुकड़े टुकड़े होने और उसे नष्ट होने से बचाया तथा एक पाक-साफ धार्मिक तरीक़े से यौन संबंध रचाने का आदेश दे कर स्वभाव के हित का पालन किया और इस्लाम ने व्यक्तिगत सम्पत्ति को वैध ठहराया, व्यक्ति जितनी सम्पति चाहे रख सकता है परन्तु यह वैध रूप से जमा किया गया

हो, ठीक उसी समय इस्लाम ने इस बात से रोका कि कुछ धनवानों के पास ही सारा माल एकत्र हो कर रह जाए जबकि बाक़ी लोग भूक का कष्ट उठा रहे हों, तो यह चीज़ भी इस्लाम से संबंधित नहीं है।

7. सरल धर्म-शास्त्रः

निःसन्देह आसानी एंव सरलता इस्लाम की एक महत्वपूर्ण विशेषता है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी दो चीज़ों में से एक चीज़ को चयन करने के लिए कहा गया तो आप ने आसान चीज़ को अपनाया जब तक कि यह चीज़ पाप तथा संबंध तोड़ने का कारण न बने और अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى ٱلدِّينِ مِنْ حَرَجٍ﴾

''और धर्म के बारे में तुम पर कोई तंगी नहीं डाली।'' (सूरतुल हज्जः७८)

और अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ﴾

''अल्लाह तआला का इरादा तुम्हारे साथ आसानी का है, सख्ती का नहीं।'' (सूरतुल बक़राः१८५)

और संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''यह धर्म आसान है।''

पस लोगों पर आसानी करना इस्लाम धर्म का एक मौलिक उद्देश्य है। तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने धर्म के अन्दर अतिशयोक्ति से रोका है, अपने आप पर तथा लोगों के ऊपर कठोरता करने से रोका है, परन्तु यह सरलता वैध तथा अवैध की सीमा को पार न करे, अन्यथा यह

अल्लाह की सीमाओं का अपमान करना होगा, पस वास्तविक सरलता वही है जो धर्म के अनुसार हो।

8. मानवता-प्रेमी धर्म-शास्त्रः

पस यह मानव के गौरव और प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों का सम्मान करता है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيٓ ءَادَمَ وَحَمَلْنَٰهُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴾

‘‘निःसन्देह हम ने आदम की संतान को बड़ा सम्मान दिया और उन को थल तथा जल की सवारियाँ प्रदान की और उन को पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की और

अपनी बहुत सी सृष्टि पर उन को श्रेष्ठता प्रदान की। (सूरतुल-इस्राः७०)

इस्लाम ने मानवता को इस प्रकार सम्मान दिया कि नाजाईज़ तरीक़े से उसे दुःख पहुँचाने को अवैध क़रार दिया, पस इस ने लोगों की जानों, मालों, उन की इज़्ज़तों, उनके धर्मों, तथा उनके नसब की हिफाज़त की और लेन देन तथा व्यवहार (मामलादारी) को प्रसन्नता और आसानी पर आधारित क़रार दिया। उन मामलों का इस्लाम में कोई एतबार नहीं जो जबरन किये जायें तथा इस से बड़ी बात तो यह है कि इस्लाम ने लोगों को इस के ऊपर ईमान लाने पर मजबूर नहीं किया, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِۖ﴾

''धर्म के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं।'' (सूरतुल बक्राः२५६)

तथा नसरानियों और यहूदियों ने मुसलमानों के बीच एक लम्बे समय तक जीवन बिताए हैं और इस दौरान उस इस्लामी शासन के साये में रह कर अपने अधिकार से लाभान्वित होते रहे जिस इस्लामी शासन का रक़ूबा इतना बड़ा था कि उस में सूरज ग़ायब नहीं होता था। तथा इस बात का इतिहास ने वर्णन नहीं किया है कि मुसलमानों ने इन लोगों पर इस्लाम में दाखिल होने के लिए दबाव डाला हो। और पश्चिमी विचारकों ने इस (वास्तविकता) को स्वीकार किया है तथा उन्हों ने इस्लामी सरलता के इस अत्मा की प्रशंसा की है।

इस्लाम की कुछ संछिप्त खूबियाँ

१. इस्लाम की एक खूबी यह है कि इस ने अकेले अल्लाह की उपासना करने का आदेश दिया है जिस का कोई साझी नहीं, पस अल्लाह तआला अकेला है जिस का कोई साझी नहीं, न उस ने किसी को जना है और न ही वह किसी से जना गया है। तथा कोई भी उस का साझी नहीं।

२. इस्लाम की एक विशेषता यह है कि इस ने तमाम रसूलों पर विश्वास रखने का आदेश दिया, पस सभी रसूलों पर ईमान लाये बिना कोई मुसलमान नहीं हो सकता तथा उन रसूलों में मूसा, ईसा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हैं।

३. तथा इस्लाम धर्म की खूबी यह भी है कि उस ने उन सभी आसमानी किताबों पर विश्वास रखने का आदेश दिया जो अल्लाह की ओर से उतरीं

जैसे तौरात, इन्जील, ज़बूर तथा कुरआन, परन्तु यह सूचना भी दे दी है कि कुरआन से पहले की किताबों में परिवर्तन तथा गड़बड़ी पैदा हो चुकी है।

४. तथा इस्लाम की एक विशेषता यह है कि इस ने फरिश्तों के ऊपर ईमान लाने का आदेश दिया है तथा उन के कार्यों को स्पष्ट किया तथा बतलाया कि यह फरिश्ते अललाह के आदेश का पालन करते हैं और कभी भी उस की अवज्ञा नहीं करते।

५. तथा इस्लाम की एक खूबी यह है कि इस ने क़ज़ा व क़द्र (ईश्वरीय निर्णय) पर ईमान लाने का आदेश दिया। इस ईमान का बड़ा लाभ यह है कि इस से दिल को संतोष, सुकून तथा अन्दरूनी शान्ति प्राप्त होती है; क्योंकि मोमिनों को पता होता है कि इस संसार में जो कुछ भी होता है वह अल्लाह की मशीयत (चाहत) से होता है, तो

अल्लाह ने जो चाहा वह हुआ जो नहीं चाहा वह नहीं हुआ, पस अल्लाह तआला हो चुकी और होने वाली चीज़ों को जानता है, तथा उन चीज़ों को भी जानता है जो प्रकट नहीं हुई यदि प्रकट होती तो कैसी होती और यही ज्ञान का अंत है।

६. इस्लाम की एक खूबी यह भी है कि इस ने नमाज़, रोज़ा, ज़कात, तथा हज्ज का आदेश दिया तथा इन में से हर उपासना के बहुत सारे लाभ हैं जिन को इन पन्नों में बयान नहीं किया जा सकता।

७. तथा इस्लाम की विशेषत यह भी है कि इस ने वैध तथा अवैध को लोगों के सामने स्पष्ट कर दिया और चीज़ों में जवाज़ (वैधता) को मूल ठहराया और क़ुरआन तथा हदीस के तर्क के बिना कोई चीज़ वर्जित नहीं हो सकती।

८. तथा इस्लाम की एक विशेषता यह है कि यह लोगों के ऊपर दया तथा कृपा करने वाला

धर्म है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

‘‘अल्लाह रफीक़ (नम्र) है, नरमी को पसंद करता है तथा नरमी बरतने पर वह जो कुछ देता है सखती बरतने पर नहीं देता।’’ (मुस्लिम)

६. और इस्लाम की खूबियों में से यह भी है कि इस ने लोगों के लिए तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है कि कहीं वह मायूस तथा निराश न हो जायें, अल्लाह ने फरमायाः

﴿قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ
ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ﴾

‘‘(मेरी ओर से) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने अपनी जानों पर अत्याचार किया

है तुम अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो जाओ, निःसन्देह अल्लाह सारे गुनाहों को माफ कर देने वाला है, वास्तव में वह बड़ी बख्शिश और बड़ी रहमत वाला है।"

(जुमरः ५३)

पस आदमी कितने ही पाप एंव हराम कार्य कर बैठे उसके लिए संभव है कि इसे छोड़ कर उस पर लज्जित हो और उस पाप से अल्लाह तआला से तौबा कर ले और यदि उसकी तौबा सच्ची है तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार फरमाता है तथा उस पर उसे पुण्य देता है और कभी कभी उन गुनाहों को नेकियों में बदल देता है तथा यह इन्सान के ईमान की मज़बूती और उसकी तौबा की सच्चाई के हिसाब से होती है।

१०. तथा इस्लाम की एक खूबी यह है कि उस ने मर्दों को अपनी बीवियों के साथ हुसने मुआशरत

(अच्छे रहन सहन, बरताव) का आदेश दिया, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَعَاشِرُوهُنَّ بِٱلۡمَعۡرُوفِ﴾

''उन के साथ अच्छे तरीक़े से बूद व बाश रखो।'' (सूरतुन निसाः१८)

तथा उनके ऊपर अत्याचार करने और उन से नफरत करने से रोका, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई मोमिन मर्द किसी मोमिना औरत से द्वेष (बुग़ज़ व नफ़रत) न रखे, यदि उसे उसकी एक आदत ना पसंद है तो उसकी कोई दूसरी आदत से वह प्रसन्न हो सकता है।

११. इस्लाम की खूबियों में से यह है कि इस ने मर्द के ऊपर अपनी बीवी के खर्च को अनिवार्य ठहराया, अगरचे उस (बीवी) के पास माल हो तथा उसे अपना माल खर्च करने की पूरी

स्वतंत्रता दी। अतः मर्द को बीवी की इच्छा के बिना उस के माल में से कुछ भी लेने का अधिकार नहीं है।

१२. इस्लाम की एक खूबी यह है कि इस ने ऊँचे अखलाक़ की ओर आमंत्रित किया जैसे न्याय, सच्चाई, अमानत दारी, मुसावात, कृपा, सखावत, वीरता, वफादारी, नम्रता, तथा बुरे अखलाक़ से रोका जैसे अत्याचार, झूठ, कठोरता, कंजूसी, बहाने बनाना, खयानत तथा घमण्ड करना। और अल्लाह ने अपने सन्देष्टा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अच्छे अखलाक़ की प्रशंसा की है, चुनांचे अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾

“निःसन्देह आप बड़े उत्तम स्वभाव पर हैं।”
(सूरतुल क़लमः४)

१३. तथा इस्लाम की खूबियों में से यह भी है कि इस ने हर चीज़ यहाँ तक कि जानवरों के साथ तक भी एहसान करने का आदेश दिया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''एक नारी को एक बिल्ली के विषय में यातना से दो चार होना पड़ा, उस ने उसे क़ैद में डाल दिया यहाँ तक कि वह मर गई तो उस ने इसके परिणाम में नरक में प्रवेश किया, न तो उस ने उस को खिलाया पिलाया और न ही उस को छोड़ा कि वह ज़मीन (खेती) के कीड़े-मकूड़े खा सके।''

आज से चौदह शताब्दी पूर्व इस्लाम का जानवरों के साथ दया का यह एक उदाहरण है तो लोगों के साथ इसका क्या हाल होगा।

१४. इस्लाम की एक खूबी यह है कि इस ने मामले (व्यापार आदि) में धोखा धड़ी करने से रोका है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया किः **''जिस ने धोखा दिया वह हम में से नहीं।''**

१५. तथा इस्लाम की एक विशेषता यह है कि यह कार्य करने और जीविका ढूँढने पर उभारता है तथा सुस्ती और लोगों के सामने भीक मांगने से रोका परन्तु जब कोई सख्त आवश्यकता में हो तो उसे पूरा करने के लिए भीक मांग सकते हैं।

तो इस्लाम प्रयत्न करने, कार्य करने तथा मेहनत करने का धर्म है, सुस्ती तथा आलस्य और शिथिलता का धर्म नहीं, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿فَإِذَا قُضِيَتِ ٱلصَّلَوٰةُ فَٱنتَشِرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَٱبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِ ٱللَّهِ﴾

''फिर जब नमाज़ हो चुके तो धर्ती पर फैल जाओ और अल्लाह का फजूल तलाश करो

और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का वर्णन करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।'' (सूरतुल जुमुआ:१०)

इस्लाम धर्म की विशेषताओं तथा खूबियों के विषय में यह चंद बातें हैं और इस पुस्तिका के अन्दर उन खूबियों को विस्तार और विवरण के साथ नहीं लिखा जा सकता।